Our Website- https://thehindipage.com/blog/
Join Telegram- https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria
Our Youtube Channel- https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

SMILE – SAT : 06

भूगोल : कक्षा – 12

LESSON – 13 (भारत : जनसंख्या वितरण,घनत्व एवं वृद्धि)

जनसंख्या वृद्धि के कारण

1. निम्न साक्षरता–

भारत में साक्षरता का स्तर निम्न मिलता है। भारत में अभी भी लगभग 27% जनसंख्या साक्षर नहीं है साथ ही भारत में पुरुष साक्षरता की तुलना में महिला साक्षरता बहुत कम मिलती है।

2. परंपरावादी सोच–

भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग आज भी पुरानी परंपराओं से ग्रसित है जिसके कारण इस तरह के लोग जन्म निरोध के आधुनिक उपायों को नहीं अपनाते हैं जिससे जन्म दर का ऊंचा स्तर बना रहता है।

3. संयुक्त परिवार–

भारत के कई क्षेत्रों में आज भी संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन देखने को मिलता है। संयुक्त परिवार में बच्चों के लालन–पालन का दायित्व माता पिता पर न होकर संपूर्ण परिवार पर होता है। इसी कारण ऐसे दंपत्ति बच्चों के जन्म को भार नहीं समझते, साथ ही संयुक्त परिवार में लड़के और लड़कियों का विवाह भी कम उम्र में कर दिया जाता है।

4. पुत्र के जन्म को प्राथमिकता–

देश के अधिकांश परिवारों में लड़कियों की तुलना में लड़कों के जन्म को महत्वपूर्ण माना जाता है। हिंदू धर्म में पुत्र को वंश चलाने वाला माना जाता है तथा पुत्र से परिवार को आर्थिक संरक्षण भी प्राप्त होता है। यही कारण है कि कई पुत्रियों के होने के बावजूद पुत्र होने की चाहत में परिवार बच्चे पैदा करते जाते हैं जिससे परिवार का आकार बड़ा हो जाता है।

5. समाज में महिलाओं की उपेक्षित स्थिति–

समाज में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम सम्मान मिलता है। उन्हें केवल बच्चों के जन्म देने का माध्यम माना जाता है, जिससे परिवार बड़ा होता जाता है।

6. मध्यम नगरीकरण–

भारत की कुल जनसंख्या की **31.20** प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है और **68.80%** जनसंख्या गांवों में निवास करती है जो रूढ़िवादी व परंपरावादी होने के कारण छोटे परिवार के महत्व को नहीं समझते। यही कारण है कि भारत की ग्रामीण क्षेत्रों में जन्म दर अपेक्षाकृत अधिक मिलता है जो जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख कारण है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के सामाजिक आर्थिक प्रभाव

1. व्यक्ति अपनी भौतिकवादी सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण ढंग से विदोहन कर रहा है जिससे प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है।

2. कृषि में कीटनाशकों तथा रासायनिक उर्वरकों का अधिकाधिक प्रयोग किया जा रहा है जिसके गंभीर प्रतिकूल प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहे हैं।

3. बढ़ती जनसंख्या के लिए मकानों की आपूर्ति के लिए कृषि भूमि का उपयोग बढ़ रहा है। घटती कृषि भूमि से देश में खाद्यान्न उत्पादन की समस्या गंभीर होने का संकट उत्पन्न हो सकता है।

4. प्राकृतिक संसाधनों के अति विदोहन से उन पशु–पक्षी व वन्यजीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है जो पर्यावरण संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5. भूमिगत जल स्तर में सतत रूप से गिरावट आती जा रही है जिससे भविष्य में मानव को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है।

6. तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण मानव ने उपलब्ध पेयजल का लगभग 70: भाग प्रदूषित कर दिया है तथा शेष 30: जल अति प्रदूषित होने के कारण संक्रामक रोगों को फैलाने के लिए उत्तरदायी होता है। इससे 15 लाख बच्चों की प्रतिवर्ष मृत्यु हो जाती है।

7. मानव द्वारा प्रकृति से की जा रही अनावश्यक छेड़छाड़ से अनेक औषधीय पौधे विलुप्त होने की कगार पर है।

8. वायुमंडल में भारी मात्रा में कार्बन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो रही है साथ ही ग्लेशियरों के पिघलने की दर में बढ़ोतरी होने से सागर तल में वृद्धि हो रही है। मानव द्वारा प्रकृति से की जा रही अनावश्यक छेड़छाड़ से मौसम परिवर्तन तथा सागरीय जीव–जंतुओं पर प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिल रहे हैं।

9. वनों के काटने से सूखा, बाढ़ तथा मिट्टी अपरदन की घटनाएं बढ़ी है।

10. वाहनों से वायु प्रदूषण तथा शोर प्रदूषण के स्तर में वृद्धि हुई है जिसका मानव के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

11.कुपोषण व भूखग्रस्त लोगों की संख्या बढ़ी है।

12.आर्थिक विकास की वृद्धि धीमी पड़ी है तथा बेरोजगारी बढ़ी है।

13.क्षेत्रवाद, जातिवाद, धर्मवाद की भावना समाज में बढ़ने से कानून व्यवस्था में गिरावट आई है।

14.एड्स,यौन रोग, खसरा, चेचक, डेंगू तथा मलेरिया जैसे रोगों के संक्रमण का खतरा बढ़ गया है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के उपाय

1. विवाह की आयु में वृद्धि–

देश में विवाह के लिए लड़कों की न्यूनतम आयु 21 वर्ष व लड़कियों के लिए 18 वर्ष निर्धारित है, लेकिन इस कानून का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है। यदि भारत में विवाह की इस निर्धारित आयु को और बढ़ा दिया जाए तो इससे साक्षरता में तो वृद्धि होगी ही साथ ही संतानोत्पत्ति समय पर नियंत्रण भी होगा जिससे जनसंख्या वृद्धि कम हो सकती है।

2. उत्पादन में वृद्धि–

कृषि तथा उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन में वृद्धि करने से आम व्यक्ति की आय बढ़ती है तथा रहन–सहन का स्तर भी बढ़ता है जिसके परिणाम स्वरूप वह भविष्य के लिए लाभकारी योजनाओं का निर्माण करता है तथा व्यक्तियों का झुकाव छोटे परिवार की ओर बढ़ता है।

3. परिवार कल्याण कार्यक्रमों का विस्तार–

जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों द्वारा जन जागरण कार्यक्रमों का संचालन कर छोटे परिवार के महत्व की जानकारी प्रत्येक परिवार तक पहुंचाना आवश्यक है। इससे जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण में पर्याप्त सहयोग मिलेगा।

4. शिक्षा का प्रसार–

परिवार कल्याण कार्यक्रमों के समुचित क्रियान्वयन के लिए अधिकाधिक जनसंख्या को साक्षर करना अति आवश्यक है। शिक्षित व्यक्ति अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास करते हैं साथ ही छोटे परिवार का महत्व समझते है। अतः शिक्षा का प्रसार जनसंख्या नियंत्रण हेतु प्रभावी उपाय हो सकता है।

मुकेश जाखड़
व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
अमरपुरा जालू, संगरिया (हनुमानगढ)
वाट्सएप्प– 8890234772